L.N. Mithila University
Darbhanga (Bihar)
B.A Part- II
B.A Paper- III
Psychology (Honours)
Social Psychology
Topic- Agencies of socialization.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor,
Guest Teacher
Madhubani (Bihar)
pramodkumarsahu2018@gmail.com
V.S.J. College, Rajnagar.

समाजीकरण के माध्यम या साधन- (Agencies of socialization)

सामाजिक नियमों के अनुसार जब व्यक्ति व्यवहार करना सीख लेता है तो इसे समाजीकरण की संज्ञा दी जाती है। सम्पूर्ण में देखा जाए तो समाजीकरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया (complex process) है जिसमें भिन्न भिन्न तरह के कारकों द्वारा प्रतिपादित किया जाता है। कुछ प्रमुख कारक या साधन जिनके द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया होती है।

(1) परिवार- (Family) - समाजीकरण के विभिन्न साधनों में परिवार का महत्व अद्वितीय है। बच्चा एक परिवार में जन्म लेकर वह उस परिवार का सदस्य बन जाता है। चूँकि परिवार एक प्राथमिक समूह है अतः इसके सदस्यों जैसे- माता- पिता, भाई- बहन, नाना- नानी आदि में एक घनिष्ठ संबंध होता है। इसके बीच- दुलार- प्यार सहयोग आदि की भावना अधिक होती है। इन सबका प्रभाव बच्चों के समाजीकरण पर अधिक पड़ता है। अनेक समाजशास्त्रियों एवं समाज मनोवैज्ञानिक का मानना यह है कि परिवार ही वह पहली संस्था होती है जो बच्चों को शिष्टाचार एवं नैतिक विचार की शिक्षा देकर उसे एक योग्य व्यक्ति बनाता है। समाजीकरण में परिवार की परिवार का महत्व को इस प्रकार व्यक्त किया है। संस्कृति एवं सामाजिक कर्म के चार तत्वों को बच्चों के पहले की एवं उनके व्यक्तिगत विकास के निर्माण करने की जिम्मेदारी पहला परिवार पर ही होती है। परिवार में बच्चों की सबसे पहली अन्तःक्रिया माता- पिता से होती है।

(2) साथियों का समूह - समाजीकरण के एक प्रमुख साधन के रूप में परिवार के बाद साथियों के समूह का स्थान आता है। बालक जैसे थोड़ा बड़ा होकर चलने-फिरने लगता है, तो वह समान उम्र के अन्य बच्चों के सम्पर्क में आता है। और वह एक टोली का निर्माण करता है। इस टोली की सदस्यता नहीं होती है। ये सदस्य लगभग बराबर करीब-करीब एक ही उम्र के होते हैं। परन्तु वे भिन्न-भिन्न परिवार के होते हैं। नई टोली की उम्र स्तरों पर अधिक देखने को मिलती है। स्कूल में प्रथम प्रवेश करने के पहले-की उम्र के बच्चों की टोली तथा स्कूल के साथियों की टोली प्राक्स्कूल टोली के बच्चों जिनकी उम्र 3 से 5 साल के बीच होती है। आपस में मिलकर भिन्न-भिन्न तरह के खेल खेलते हैं जिनमें कल्पनात्मक खेल का महत्व अधिक है। बच्चों के कल्पनात्मक खेल द्वारा उनका समाजीकरण भी होता है क्योंकि इस खेल में बच्चे कल्पनात्मक रूप से भिन्न भिन्न तरह की भूमिका करते हैं जिनसे उसे भूमिका से सम्बन्धित व्यवहार-व्यवहारों का अनुभव होता है जो उन्हें सामाजिक व्यवहार को सीखने में मदद करता है। अनुवाद एवं उम्र के बच्चों की टोली में तुलना, एवं बच्चा टीचर बच्चों पर अधिक ध्यान देता है तथा टीचर की अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश करता है स्वतः परिणाम नहीं होता है। कि उन बच्चों में सामाजिक सहयोग की भावना जगाती है। जब बच्चे बड़े होकर स्कूल में प्रवेश करते हैं और वहाँ जो वे अपनी टोली बनाते हैं उसका प्रभाव समाजीकरण पर प्राक्स्कूल की टोली की अपेक्षा अधिक पड़ता है। स्कूल की टोली बच्चों के लोकतांत्रिक होने में सहायक होती है। स्वावलंबन तथा समाज विरोधी विचारों को दूर करके एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने में सहायक होती है तथा साथ-साथ उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करके अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं के बढ़ाने की रुचि का अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश करता है स्वतः परिणाम नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

कि वह बच्चों में सामाजिक सहयोग की भावना जगाते हैं। जब बच्चे बड़े होकर स्कूल में प्रवेश करते हैं और वहाँ भी वे अपनी टोली बनाते हैं। इस प्रकार समाजीकरण पर स्कूल की टोली का और भी अधिक पड़ता है। स्कूल की टोली बच्चों को लोकतांत्रिक होना सिखलाती है। स्वामीभक्ति तथा समाज विरोधी प्रवृत्ति से आप ऊपर उठकर एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करना सिखलाती है। साथ-ही-साथ उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करते अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं के प्रदर्शन का मौका देती है। जिसके आधार पर उनकी निम्नांकित पद तरीकों से वर्णन किया है। जिसके सहारे साथियों का समूह बच्चों को समाजीकृत करता है।

(i) साथियों का समूह भिन्न-भिन्न परिवार के बच्चों को एक-दूसरे से नजदीक आने का मौका देता है। तथा उन्हें एक सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार करने की प्रेरणा देता है।

(ii) साथियों का समूह बच्चों में विवेकशील अन्तःकरण विकसित करने में मदद करता है। विवेकशील अन्तःकरण से बालक सामाजिक मूल्यों को समझने तथा उसके अनुसार व्यवहार करना सीखने से होता है।

(iii) साथियों द्वारा प्राप्त अनुभवों से बच्चों में उचित सामाजिक मनोवृत्ति विकसित होती है। बालक यह सीख लेते हैं कि अन्य व्यक्तियों के साथ उनका सम्बन्ध कैसे रहना चाहिए। तथा सामाजिक नियमों एवं समूह की क्रियाओं के साथ किस तरह से आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

(iv) साथियों का समूह लड़कों का सांवेगिक सन्तुलित होता है। जिससे उनमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न होती है। बाद में चलकर इन बच्चों की समाजीकरण अधिक तेजी से होती है। इस तरह से हम देखते हैं कि साथियों का समूह बच्चों को समाजीकृत करने में बड़े ढंग से मदद करता है।

Scanned with CamScanner

(4) स्कूल (School) - समाजीकरण के साधन के रूप में स्कूल का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चों के समाजीकरण में स्कूल के महत्व की विवेचना के लिए समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा कई अध्ययन किये गये हैं एवं समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है। कि स्कूल सिर्फ बच्चों को शिक्षा ही नहीं देता है। बल्कि सामाजिक मूल्यों सामाजिक प्रतिमानों सामाजिक आदर्शों के बारे में बतलाकर बच्चों में समाजीकरण की नींव डालता है। स्कूल के भिन्न पहलुओं जैसे - प्रवृत्ति भौतिक संरचना शिक्षक पाठ्यपुस्तक आदि का समाजीकरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। का अध्ययन किया जाता है। स्कूल की भौतिक संरचना में स्कूल के आकार के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। कुछ स्कूल का आकार काफी बड़ा एवं विशाल होता है।

(4) पास-पड़ोस - (Neighbourhood) बच्चों के समाजीकरण में पास-पड़ोस एक महत्वपूर्ण साधन है पास पड़ोस के व्यक्तियों के सम्पर्क में आने से बच्चा नये-नये व्यवहारों को सीखता है। आपस में मिलकर बच्चा, पड़ोसियों द्वारा भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक समस्याओं पर विचार किया जाता है। जिससे बच्चा नये-नये अनुभवों से परिचित होता है। और वे उन्हें जीवन की वास्तविक रूप से अपने व्यक्तित्व में समावेश कर लेते हैं - इस तरह बच्चे समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती जाती है -

(5) जाति एवं वर्ग (Caste and class) भारत जैसे देश में जाति एक महत्वपूर्ण साधन है। जिससे बच्चे समाजीकरण की प्रक्रिया नियंत्रित होती है। जाति व्यक्ति के जन्म द्वारा निर्धारित होने वाला एक व्यवस्था है जो अपने सदस्यों या व्यक्तियों के सामने कुछ निश्चित नियम तथा प्रतिबन्ध प्रस्तुत करता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 31/08/2020
Sub - Psychology